

नारीशक्ति: समाज और राष्ट्र की मुख्यधारा में रचनात्मक योगदान

प्रीति मिश्रा

एम.एड. छात्रा, डिपार्टमेंट ऑफ टीचर एजुकेशन, इलाहाबाद स्कूल ऑफ एजुकेशन, सैम हिगिन बॉटम
यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर टेक्नोलॉजी एंड साइंस, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

“मुस्कुरा के दर्द भुला के,
रिस्तो में बाधे दुनिया सारी;
हर पथ को रोशन करने वाली,
वो शक्ति है एक नारी।”

शोधसार :

हमारे देश भारत में नारी को देवी का रूप माना जाता है। भारत की नारीयों ने प्राचीन काल से ही अपनी शक्ति और सामर्थ्य का समय-समय पर परिचय दिया है। नारी शक्ति का अर्थ है महिलाओं को समाजिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनैतिक सकारात्मकता प्रदान करना है। नारी शक्ति का मूल मंत्र है “सशक्त नारी, सशक्त समाज, सशक्त राष्ट्र” भारतीय समाज में महिलाओं के योगदान को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने इस प्रकार वर्णन किया है – भारत की महिलाओं की दृढ़ इच्छाशक्ति, उनकी कल्पनाशीलता, उनकी त्वरित निर्णय लेने की क्षमता, निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की उनकी कठोरता और उनकी कड़ी मेहनत की पराकाष्ठा यही हमारी नारी शक्ति की पहचान है।” अतः यह आवश्यक है कि हम नारीयों के योगदान को सम्मानित करें और उन्हें अवसर प्रदान करें। नारी शक्ति का सशक्तिकरण न केवल उनके व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक है बल्कि पूरे राष्ट्र के लिए व समाज के लिए आवश्यक है। शक्ति के इस दौर में नारी शक्ति के विचारों की ऊँचाई हिमालय की तरह, समावेशिता सागर की तरह, दृढ़निश्चय साधक की तरह है जो भारत को पुनः विश्वगुरु बनने के अपने संकल्प को साकार करेगा।

सुचक शब्द: नारीशक्ति, महिला सशक्तिकरण, महिला अधिकार, समाज और राष्ट्र का विकास, महिला नेतृत्व।

परिचय

भारतीय संस्कृति में नारी को 'शक्ति' का रूप मानकर सम्मान दिया गया है। हालांकि, समय के साथ सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक कारणों से नारी की स्थिति में गिरावट आई। प्राचीन काल में जहां महिलाएं पुरुषों के समान अधिकार और स्वतंत्रता रखती थीं, वहीं मध्यकालीन युग में उनके अधिकारों और स्वतंत्रता पर गंभीर प्रतिबंध लगाए गए। यह शोधपत्र नारीशक्ति के महत्व, उसकी चुनौतियों और समाज व राष्ट्र के विकास में योगदान को रेखांकित करता है।

भारतीय समाज में नारी को 'शक्ति' के रूप में मान्यता दी गई है, जो उसकी अदम्य साहस और सामर्थ्य का प्रतीक है। प्राचीन काल में, महिलाएं पुरुषों के समान अधिकारों और स्वतंत्रता का आनंद लेती थीं, लेकिन समय के साथ सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक कारकों के कारण उनकी स्थिति में गिरावट आई। मध्यकालीन युग में महिलाओं के अधिकारों पर गंभीर प्रतिबंध लगाए गए, जिससे उनकी भूमिका सीमित हो गई। हालांकि, 20वीं सदी के मध्य से नारी जागरण और समानता की मांग ने एक नई दिशा ली, जिसमें समाज सुधारकों ने महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। स्वतंत्रता के बाद, भारतीय संविधान ने महिलाओं को शिक्षा, रोजगार और समान अवसर प्रदान किए, जिससे वे विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति कर सकीं। आज की नारी न केवल अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है, बल्कि वह समाज के हर क्षेत्र में सक्रिय रूप से भाग ले रही है। शिक्षा, राजनीति, विज्ञान, कला और संस्कृति में महिलाओं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है, और यह न केवल परिवार बल्कि सम्पूर्ण समाज और राष्ट्र के विकास में सहायक सिद्ध हो रहा है। इस शोधपत्र में नारी शक्ति के महत्व, उसकी चुनौतियों और समाज एवं राष्ट्र के विकास में उसके योगदान को विस्तार से प्रस्तुत किया जाएगा, ताकि यह स्पष्ट किया जा सके कि नारी का सशक्तिकरण न केवल उनके व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक है, बल्कि यह समग्र राष्ट्र के लिए भी अनिवार्य है। इसके माध्यम से, हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि कैसे नारी शक्ति को सशक्त बनाना आवश्यक है ताकि महिलाएं अपनी पूरी क्षमता तक पहुँच सकें और समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकें। इस दिशा में उठाए गए कदमों का विश्लेषण करते हुए, यह स्पष्ट होगा कि शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक अवसरों के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने से न केवल उनकी स्थिति में सुधार होगा, बल्कि इससे समाज की समृद्धि और विकास की गति भी तेज होगी। इसके अलावा, जब महिलाएं अपने अधिकारों और अवसरों का उपयोग करने में सक्षम होती हैं, तो वे नेतृत्व की भूमिकाओं में भी कदम रख सकती हैं, जिससे निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में विविधता और समावेशिता बढ़ती है। इस प्रकार, यह आवश्यक है कि नीति निर्माताओं और समाज के सभी हिस्सों को मिलकर काम करना चाहिए ताकि महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा दिया जा सके और उनके विकास

को सुनिश्चित किया जा सके। यह न केवल महिलाओं के लिए लाभकारी है, बल्कि समग्र समाज की प्रगति और विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है।

नारीशक्ति का महत्व

नारीशक्ति का अर्थ है महिलाओं को शैक्षणिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से सशक्त बनाना। एक सशक्त नारी न केवल अपने परिवार का मार्गदर्शन करती है, बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसे इस प्रकार परिभाषित किया है, "भारत की महिलाओं की दृढ़ इच्छाशक्ति, कल्पनाशीलता, और कठोर मेहनत ही नारीशक्ति की पहचान है।"

नारी शक्ति का मूल मंत्र है "सशक्त नारी, सशक्त समाज, सशक्त राष्ट्र" नारीशक्ति केवल व्यक्तिगत सशक्तिकरण तक सीमित नहीं है; यह समाज और राष्ट्र की प्रगति के लिए भी आवश्यक है। जब महिलाएं शिक्षित और आत्मनिर्भर बनती हैं, तो वे न केवल अपने परिवारों को बेहतर दिशा में ले जाती हैं, बल्कि समाज को भी नई उंचाइयों तक पहुंचाती हैं।

इतिहास में नारी की स्थिति

इतिहास में नारी की स्थिति को तीन प्रमुख कालों में विभाजित किया जा सकता है: प्राचीन काल, मध्यकाल और आधुनिक काल। प्रत्येक काल में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति में विभिन्न प्रकार के बदलाव देखे गए हैं।

प्राचीन काल

प्राचीन काल में भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति सम्मानजनक थी। समाज में महिलाएं पुरुषों के साथ समान रूप से भागीदार थीं। वे वेद अध्ययन करती थीं, शिक्षित और स्वतंत्र होती थीं। उन्हें शिक्षा का अधिकार था। समाज में उनकी स्वतंत्रता और समानता सुनिश्चित थी। गार्गी, मैत्रेयी जैसी विदुषी स्त्रियों का उल्लेख मिलता है।

मध्यकालीन युग

मध्यकाल में महिलाओं की स्थिति में गिरावट आने लगी। पुत्र प्राप्ति की इच्छा बढ़ने लगी, जिससे स्त्रियों का महत्व घटा। पर्दा प्रथा, बाल विवाह, और सती प्रथा जैसी प्रथाओं ने महिलाओं की स्वतंत्रता को सीमित कर दिया। मध्यकाल के अन्त तक उनकी स्थिति और अधिक दयनीय हो गई, अत्याचार बढ़े। शिक्षा और सामाजिक स्वतंत्रता से वंचित कर दिया गया।

आधुनिक काल

आधुनिक काल में महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए कई प्रयास किए गए। आधुनिक युग में समाज सुधारकों जैसे राजा राममोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर और महात्मा गांधी ने नारी उत्थान के लिए काम किया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महिलाओं ने सक्रिय भूमिका निभाई (रानी लक्ष्मीबाई, सरोजिनी नायडू)। संविधान में महिलाओं को समान अधिकार प्रदान किए गए। महिलाओं के लिए शिक्षा, रोजगार, और सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में कई योजनाएं लागू की गईं। महिला आरक्षण, बेटे बचाओ बेटे पढ़ाओ, और अन्य योजनाओं के माध्यम से महिलाओं की स्थिति में सुधार हो रहा है।

नारीशक्ति का समाज की मुख्यधारा में योगदान

महिलाओं ने अपनी मेहनत, परिश्रम, और दृढ़ इच्छाशक्ति से हर क्षेत्र में समाज को योगदान दिया है। उनके प्रयासों से समाज में सकारात्मक बदलाव आए हैं। आड़े विभिन्न क्षेत्रों में उनके योगदान का अवलोकन करते हैं।

शिक्षा में योगदान

शिक्षा महिलाओं के सशक्तिकरण का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। शिक्षित महिलाएं न केवल अपने बच्चों को बेहतर मार्गदर्शन देती हैं, बल्कि समाज को भी शिक्षित करती हैं, सही दिशा देती हैं। कई महिलाएं शिक्षिका, वैज्ञानिक, और शोधकर्ता बनकर समाज की सेवा कर रही हैं। महिलाएँ शिक्षा के क्षेत्र में समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। महान शिक्षिका और विचारक: सावित्रीबाई फुले, जिन्होंने महिलाओं के लिए शिक्षा का मार्ग प्रशस्त किया, भारतीय नारी शिक्षा की आदर्श हैं। आज महिलाएँ विश्वविद्यालयों, स्कूलों और शोध संस्थानों में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। स्वामी विवेकानंद के विचार—“शिक्षित नारी, शिक्षित समाज की नींव है।”

उदाहरण: कल्पना चावला, लीला सेठ, और इंदिरा गांधी।

आर्थिक योगदान

ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में महिलाएं स्व-सहायता समूहों, कृषि, छोटे एवं कुटीर उद्योगों और सेवा क्षेत्र के माध्यम से आत्मनिर्भर बन रही हैं। उन्होंने तकनीकी, शिल्प, और सेवा क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है। उद्यमिता: महिलाएँ स्वयं सहायता समूहों, स्टार्टअप्स और लघु उद्योगों के माध्यम से आर्थिक विकास में योगदान दे रही हैं। आर्थिक सर्वेक्षण 2021-22 के अनुसार, महिलाओं की भागीदारी ग्रामीण क्षेत्रों में 23% और शहरी क्षेत्रों में 17.5% है।

उदाहरण: भारतीय उद्योगपतियों में फाल्गुनी नायर और किरण मजूमदार शॉ जैसे नाम प्रेरणास्रोत हैं।

राजनीतिक योगदान

महिलाएं आज राजनीति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। पंचायत स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक वे चुनाव लड़ रही हैं और नीतिगत निर्णयों में सक्रिय हैं। नारी शक्ति वंदन अधिनियम 2023 के लागू होने के बाद लोकसभा में महिलाओं की भागीदारी 33% होगी। 2023 में पारित नारी शक्ति वंदन अधिनियम के तहत संसद और विधानसभाओं में 33% आरक्षण प्रदान किया गया है। उदाहरण इतिहास में स्वतंत्रता संग्राम में सरोजिनी नायडू, विजयलक्ष्मी पंडित और इंदिरा गांधी जैसी महिलाएँ प्रेरणा रही हैं।

खेल , कला और सांस्कृतिक के क्षेत्र में योगदान

महिलाओं ने साहित्य, कला, संगीत, और नृत्य जैसे सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी अहम भूमिका निभाई है। उन्होंने परंपराओं को संजोने और नई संस्कृतियों को विकसित करने का कार्य किया है। उदाहरण: सरोजिनी नायडू और सुचित्रा कृपलानी। खेल मेरी कॉम, पी.वी. सिंधु और साक्षी मलिक जैसी महिला खिलाड़ी भारतीय गौरव बढ़ा रही हैं।

विज्ञान और तकनीकी में योगदान

महान वैज्ञानिक: कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स और टेसी थॉमस जैसी महिलाएँ इस क्षेत्र में प्रेरणा स्रोत हैं। तकनीकी क्षेत्र में नेतृत्व: बड़ी टेक कंपनियों और सरकारी संगठनों में महिलाएँ निर्णायक भूमिका निभा रही हैं।

चुनौतियां और समस्याएं

हालांकि महिलाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है, लेकिन आज भी वे कई चुनौतियों का सामना करती हैं।

सामाजिक चुनौतियां

पितृसत्तात्मक मानसिकता: भारतीय समाज अभी भी पितृसत्तात्मक सोच से जकड़ा हुआ है। महिलाओं को द्वितीय श्रेणी का नागरिक माना जाता है। महिलाओं को समान अधिकार प्राप्त करने में कठिनाई होती है।

लिंगभेद: महिलाओं को उनके लिंग के आधार पर भेदभाव का सामना करना पड़ता है।

प्रथाएँ और परंपराएँ: बाल विवाह, दहेज प्रथा और पर्दा प्रथा जैसी कुप्रथाएँ महिलाओं के विकास में बाधक हैं।

शिक्षा और जागरूकता की कमी: कई स्थानों पर लड़कियों को शिक्षा के अवसर नहीं मिलते। ग्रामीण क्षेत्रों

में आज भी महिलाओं की शिक्षा का प्रतिशत कम है। स्कूल ड्रॉपआउट: UNESCO की रिपोर्ट 2021 के अनुसार, भारत में 12% लड़कियाँ माध्यमिक शिक्षा से बाहर हो जाती हैं। कौशल प्रशिक्षण का अभाव: महिलाओं को रोजगारोन्मुखी कौशल में प्रशिक्षित नहीं किया जाता।

आर्थिक चुनौतियाँ

आर्थिक निर्भरता: अधिकतर महिलाएँ आर्थिक रूप से पुरुषों पर निर्भर हैं।

वेतन असमानता: समान कार्य के लिए महिलाओं को पुरुषों से कम वेतन मिलता है।

स्वयं सहायता समूहों की कमी: ग्रामीण क्षेत्रों में महिला उद्यमिता के लिए पर्याप्त सहयोग नहीं मिलता।
महिलाओं की श्रम शक्ति भागीदारी दर पुरुषों की तुलना में बहुत कम है। विश्व असमानता रिपोर्ट 2022 के अनुसार, भारत में श्रम बाजार में पुरुषों की हिस्सेदारी 82% है, जबकि महिलाओं की केवल 18%।

राजनीतिक और कानूनी चुनौतियाँ

महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी अभी भी सीमित है। हालांकि महिला आरक्षण कानून से इसमें सुधार की संभावना है।

स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ:

पोषण की कमी: कई महिलाएँ गरीबी और सामाजिक भेदभाव के कारण कुपोषण का शिकार होती हैं।

मातृ मृत्यु दर: ग्रामीण क्षेत्रों में मातृ मृत्यु दर उच्च स्तर पर बनी हुई है।

सुरक्षा संबंधी चुनौतियाँ:

घरेलू हिंसा: NCRB (National Crime Records Bureau) के अनुसार, 2022 में महिलाओं के खिलाफ घरेलू हिंसा के 30% मामले दर्ज किए गए।

कार्यस्थल पर उत्पीड़न: कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीड़न की घटनाएँ महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने से रोकती हैं।

सार्वजनिक स्थानों पर असुरक्षा: महिलाओं को सार्वजनिक स्थानों पर यौन उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है।

समस्याओं का समाधान और सशक्तिकरण के उपाय

1. शिक्षा के क्षेत्र में सुधार:

बालिकाओं की शिक्षा को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। उन्हें समाज में समान अधिकार और कौशल विकास के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए जाएँ। ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में इसकी समानता होनी चाहिए। बालिकाओं को समाज में बढ़ते हुए स्वास्थ्य जागरूकता के लिए भी संयामना किया जाना चाहिए। जिससे वे स्वस्थ और सकारात्मक जीवन में और स्वतंत्र बन सकें। शिक्षा के क्षेत्र में महिला

शिक्षकों की संख्या बढ़ाई जाए। ताकि वे समाज में समान अधिकार का लाभ उठा सकें और स्वतंत्रता से अपनी पहचान बन सकें।

2. आर्थिक सशक्तिकरण:

महिलाओं के लिए स्वरोजगार और उद्यमिता को बढ़ावा दिया जाए। जिससे वे अपने आप को स्वावलंबी बना सकें। आत्मनिर्भर और स्वतंत्र महसूस कर सकें। उन्हें अपने सपनों को पूरा करने का साहस मिले। महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए उन्हें वित्तीय सहायता और प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए। इससे महिलाएं समृद्धि में सहभागी हो सकें। समान वेतन कानून को सख्ती से लागू किया जाए। और महिलाएं समान वेतन प्राप्त कर सकें।

3. स्वास्थ्य और सुरक्षा:

गर्भवती महिलाओं के लिए स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार किया जाए। इससे मातृत्व स्वास्थ्य में सुधार होगा और महिलाएं समर्थ होंगी अपने परिवार की देखभाल करने के लिए। महिलाओं की सुरक्षा के लिए सार्वजनिक स्थानों पर निगरानी तंत्र को मजबूत किया जाए। जिससे वे आत्मनिर्भर और सुरक्षित महसूस कर सकें। और अपने पोर्तेशियल को पूरी तरह से निकाल सकें। और राष्ट्र के विकास की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दें।

4. समाज में जागरूकता:

पितृसत्तात्मक मानसिकता को बदलने के लिए जागरूकता अभियान चलाए जाएँ। महिलाओं के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण विकसित किया जाए। और समाज में समानता और न्याय की भूमिका की का पालन की जाए। जिससे समाज में समरस्ता और अधिकार की भावना बढ़े। सभी लोगों को मिलकर इसमें भाग लेनी चाहिए। जिससे समाज में समरस्ता और अधिक

5. कानूनी सहायता:

महिलाओं के लिए मौजूदा कानूनों को सख्ती से लागू किया जाए। पंचायतों और ग्राम स्तर पर महिला अधिकार जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाएँ। इसके साथ ही, महिलाओं को न्याय मिलने के लिए कानूनी सहायता प्रदान करना भी आवश्यक है। इससे महिलाओं को समुचित सुरक्षा और समर्थन मिलेगा। वे अपने अधिकारों की रक्षा कर सकें और अपनी प्रतिष्ठा को बचा सकें और अपने परिवार को भी सुरक्षित रख सकें।

निष्कर्ष:

नारी शक्ति समाज की मुख्यधारा में महत्वपूर्ण और अनिवार्य भूमिका निभाती है, समाज और राष्ट्र के विकास की नींव है। नारी शक्ति के योगदान को सम्मानित करना और उनके सामने आने वाली चुनौतियों को दूर करना समाज और राष्ट्र के विकास के लिए आवश्यक है। महिलाओं की शिक्षा,

स्वास्थ्य, सुरक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के साथ-साथ उनकी नेतृत्व क्षमता को बढ़ावा देने की दिशा में ठोस प्रयास करने चाहिए। और उन्हें विकास की राह में प्रेरित करने चाहिए। नारी सशक्तिकरण न केवल उनके व्यक्तिगत विकास के लिए, बल्कि पूरे समाज और राष्ट्र की प्रगति के लिए भी आवश्यक है। नारी शक्ति ही समाज और राष्ट्र को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने का माध्यम बनेगी तथा भारत को पुनः विश्वगुरु बनने की अपने संकल्प को साकार करेगा।

नारी शक्ति को समर्पित अंतिम पंक्तियाँ:

"नारी जीवन की आधारशिला,
समाज और संस्कृति की माला की कड़ी।
सम्मान करो नारी शक्ति का,
यही है प्रगति की सही राह बड़ी।"

संदर्भ सूची:

1. भारतीय संविधान में महिला अधिकार (महिला एवं बाल विकास मंत्रालय)।
2. विश्व असमानता रिपोर्ट 2022।
3. इण्टरपार्लियामेंट्री यूनियन रिपोर्ट 2022।
4. महिला सशक्तिकरण पर आधारित रिपोर्ट, एनसीडब्ल्यू ।
5. नई शिक्षा नीति 2020।
6. महिला उद्यमिता नीति 2019।
7. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के महिला सशक्तिकरण पर भाषण।
8. नारी शक्ति वंदन अधिनियम 2023।
9. भारतीय संविधान में महिला अधिकार और समानता की अवधारणा।